हबीब तनवीर के रंगकर्म में छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति का समन्वय

डॉ. अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा वि.वि. नया रायपुर (छ.ग.)

शोध सारांशः–

प्रख्यात रंगकर्मी हबीब तनवीर ने छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति को आधुनिक रंगकर्म में समन्वित करने का अनूठा प्रयोग किया है। उन्होंने प्राचीन एवं आधुनिक रंगशैली के साथ लोकधर्मिता का सुंदर प्रयोग किया है। रंगकर्म के माध्यम से उन्होंने छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति के विविध रूपों को अतंर्राष्ट्रीय स्तर के रंगमंच पर प्रतिष्ठित किया है। लोक से ही शिष्ट की उत्पत्ति होती है। उन्होंने लोक और शिष्ट को समन्वित कर नये अंदाज में प्रस्तुत करके रंगकर्म को समृद्ध किया है।

बीज शब्दः–

हबीब तनवीर, रंगकर्म, छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति, लोकनाट्य, समन्वय।

प्रस्तावनाः–

आधुनिक रंगकर्म के इतिहास में हबीब तनवीर का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति एवं लोकपरंपरा को आधुनिक रंगमंच से जोड़कर बुलंदियों तक पहुंचाया है। हबीब तनवीर ने रंगकर्म में भारतीय और पाश्चात्य रंग शैली में छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति का सुंदर समन्वय किया है। उनके द्वारा निर्देशित अधिकांश नाटकों में लोकधर्मिता का प्रयोग स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। अपने नाटकों में वह छत्तीसगढ़ी लोकगाथा, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकभाषा और लोककलाकारों का बेहतरीन प्रयोग करते हैं। अपने नाटकों के माध्यम से वह छत्तीसगढ़ की गौरवशाली लोकसंस्कृति को अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में ''हबीब तनवीर के रंगकर्म में छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति का समन्वय'' विषय पर प्रकाश डाला गया है।

हबीब तनबीर का रंगकर्म और छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृतिः–

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के बैजनाथपारा में सन् 1923 में ''हबीब अहमद 'खान' का जन्म हुआ। शायरी के शौक के कारण उन्होंने अपना उपनाम 'तनवीर' रखा। ''पत्रकारिता, सम्पादन सहयोग, फिल्मों की समीक्षा और अभिनय, आकाशवाणी में रूपक लिखना और नाटकों में अभिनय, लेखन, समीक्षा, मंचन व निर्देशन उनके जीवन के चक्र में समय–समय पर आते रहे।'' (1) उनका पूरा जीवन रंगमंच के लिए समर्पित रहा।

1954 में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में नजीर अकबराबादी की शायरी को केन्द्र में रखकर तैयार किया गया नाटक ''आगरा बाजार'' से उन्हे एक अच्छे निर्देशक के रूप में मान्यता मिली। उसके उपरांत वह बड़े–बड़े कलाकारों के साथ इप्टा से जुडकर कार्य करते रहे। 1955 में लंदन की ''रायल अकादमी ऑफ ड्रामेंटिक आर्टस'' मे प्रशिक्षण हेतु यूरोप गए और विभिन्न देशों में घूमघूमकर नाटक देखा। तीन वर्षो तक पाश्चात्य रंग शैली से परिचित होने के बाद अपनी संस्कृति, परम्परा और ''मिट्टी की सुगंध को रंगमंच में प्रतिस्थापित करने का स्वप्न लेकर'' (2) अपने देश वापस लौट आए। कुछ दिनों तक हिन्दुस्तानी थियेटर मे काम करने के बाद अपने मित्रों और लोककलाकारों के साथ मिलकर ''नया थियेटर'' की स्थापना की और रंगमंच के क्षेत्र में पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज समकालीन रंगमंच के इतिहास में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

प्रख्यात नाट्य समीक्षक गिरीश रस्तागी का भी मानना है कि ''हमारी अपनी बड़ी ही सशक्त शास्त्रीय और लोक नाट्य परम्पराएँ हैं और हबीब तनवीर ने थियेटर को शास्त्रीय और लोक परम्पराओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। (3) समकालीन हिन्दी रंगमंच में उन्होंने तकरीबन 45 से अधिक हिन्दी नाटकों के अतिरिक्त कुछ अंग्रेजी नाटक और बच्चों के लिए बालनाटकों को साकार किया। उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य के नाटकों के साथ–साथ लोकगाथा पर आधारित नाटकों को लोकशैली प्रदान कर रंगमंच पर निर्देशित किया। वस्तुतः ''छत्तीसगढ़ अंचल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उनकी मंचीय सर्जना की गंगोत्री है।'' (4) वह, स्वयं मानते हैं कि– किसी भी नाटक की सफलता के लिए उसमें अपनी संस्कृति की छाप, अपनी जमीन की खुशबू का होना बहुत जरूरी है।'' (5) छत्तीसगढ़ लोकनाट्य शैली के साथ भारतीय और पाश्चात्य रंग शैलियों के मिश्रण से ऐसे शिल्प और मुहावरे में अपने नाटक प्रस्तुत किया जिसे सारी दुनिया ने सराहा।

दरअसल संस्कृत नाटक हो या पाश्चात्य नाटक या फिर लोकगाथाओं पर आधारित नाटक, लोकधर्मिता का सुन्दर प्रयोग सभी जगह दिखलायी पड़ता है।'' उनके रंगकर्म में अल्जीरिया का संगीत भी है और कथाकलि की रंग परी भी। उनकी अभिनय पद्धति नाट्यशास्त्र के गोमुख से निकलती नजर आती है लेकिन उसमें ब्रेख्यिन पद्धति की भी झलक है। डंकन रॉस के सूत्र से वे विशुद्ध भारतीय पद्धति में प्रस्तुत करने का मार्ग खोज लेते है। (6)

दरअसल तनवीर अपने नाटकों में खुलकर लोककलाओं का समन्वय करते है। छत्तीसगढ़ लोकगाथा, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकबाद्य, लोकभाषा और लोककलाकारों का बेहतरीन प्रयोग से वह छत्तीसगढ़ के मिट्टी की खुशबू और यहाँ की लोकसंस्कृति एवं परम्परा को आधुनिक रंगमंच में जोडकर नयी बुलन्दियों तक पहुँचाते है। रंगमंच पर लोकशक्ति का चमत्कार उनके सभी नाटकों में दिखलायी पड़ता है। दरअसल वे ''आधुनिकता में लोकतत्व का समावेश इतने पारदर्शी तरीके से करते है कि सब आर–पार नजर आता है।'' (7) नामवर सिंह का मत है कि– 'हबीब के नाटकों में लोक की

स्थानीयता का बहुत विराट स्परूप है लेकिन उनके नाटक लोकनाटक नहीं है। वैज्ञानिक सोच के साथ परिमार्जित आधुनिक नाटक है। (8)

दरअसल हबीब के नाटकों में ''समकालीनता के साथ ही सामाजिक दृष्टि का विस्तार बहुत साफ और पारदर्शी ढंग से दिखायी देता है। लोकनाट्य की समृद्ध परम्परा उनके नाटकों में है लेकिन आज के सामाजिक यथार्थ के साथ अपनी जड़ों से अपनी परम्परा में गहरे जुडे रहने के बाद भी उनके नाटक आधुनिक है।'' (9) स्वयं हबीब भी स्पष्ट करते हैं कि ''मेरा नाटक लोकशैली, लोकअभिनेता, लोकअभिनेत्री और लोकसंगीत से तैयार किये हुए आधुनिक नाटक है। हमारे समय में जो महत्वपूर्ण प्रश्न है उन्हीं को मैने अपने नाटकों में उठाया है।'' (10)

लोकनाटक शैली के संदर्भ में हबीब स्पष्ट करते है कि'' नाट्यशास्त्र के जिन बुनियादी नियम कायदों पर संस्कृत का ढांचा नजर आता है लगभग वही नियम–कायदे हमारे लोकनाट्य की विभिन्न शैलियों में भी मौजूद है। मैनें इसी दिशा में कुछ काम किया।'' (11) वस्तुतः कला का जन्म लोक से ही होता है। छ.ग. लोकनाट्य शैली का समकालीन रंगकर्म में सफल प्रयोग हेतु हबीब का कथन है कि –'नाट्शास्त्र की परम्परा लोकजीवन में मौजूद थी और आज भी मौजूद है।.....। छ.ग. के अनपढ़ कलाकारों को बिना पढ़े भी 'रस' में सिद्धि प्राप्त है अतः मैंने नाट्यशास्त्र को छोडकर लोकधर्मिता को अपनाया।'' (12)

समकालीन हिन्दी रंगमंच से छत्तीसगढ़ की लोकनाट्य शैली का समावेश उनकी नाटकों की विशिष्टता है। वह लोरिक –चंदा की प्रेमकहानी पर आधारित सोन सागर का मंचन हो या चोर की सच्चाई (विजयदान देथा) पर आधारित चरणदास चोर हो । गाँव के नाँव ससुराल और मोर नाँव दामाद में छत्तीसगढ़ी लोकगीत ददरिया, करमा और सोहर का खुबसूरत प्रयोग हो या हिरमा की अमर कहानी मे रेलो, गौरा, पाटा, बिज्जा और बिहाव नृत्य का प्रयोग या फिर वेणी संहार में पंडवानी, पोंगवा, पंडित में नाचा शैली, कामदेव का अपना बसंतऋतु के सपना में बांसगीत, चरणदास चोर में पंथी नृत्य, सोन सागर में चंदैनी गीत, आगरा बाजार मे पंडवानी का प्रयोग के साथ ही छ.ग. लोकवाद्य के साथ उसकी लोकधुनों का प्रयोग और लोक वेश–भूषा और लोकभाषा का बेहतरीन उपयोग हबीब तनवीर के द्वारा निर्देशित नाटकों की अनूठी पहचान है।

वस्तुतः रंग–संगीत रंगमंच का महत्वपूर्ण तत्व है। गीत और संगीत हबीब के नाटकों की आत्मा है। छत्तीसगढ़ी माटी से जुड़े गीत संगीत और नृत्य आधुनिक रंगमंच में स्थापित करने का श्रेय हबीब तनवीर को है उनके नाटकों में छत्तीसगढ़ी गीत चुलमाटी और तेलमाटी की धुनों की कोमल लोकवद्धता है तो ददरिया की रस वर्षा और सुआ गीत की लय के साथ पंडवानी, नाचा और पंथी नृत्य की छाप से दर्शक अभिभूत हो जाता है। (13)

हबीब के नाटकों में रंगभाषा बेहद सजीव है। उनके अधिकांश नाटकों की भाषा दैनिक बोलचाल की भाषा के साथ ही पात्रों के बेहद अनुकूल होती है। लोकभाषा का

समावेश है कथ्य के अनुरूप होने के कारण वह पूरी तरह समझ में आ जाती है। उनके नाटकों के कलाकार ठेठ छत्तीसगढ़ी में अपने संवाद बोलते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा की मिठास उनके नाटकों को सहज, स्वाभाविक बनाती है।

नाटक को रंगमंच पर प्रदर्शित करने हेतु निर्देशकीय कौशल महत्वपूर्ण है लोक नाट्य परम्परा के तत्वों का सार्थक और संतुलित प्रयोग उनके निर्देशन में साफ दिखायी देता है। वह अनेक बार नाटकों को पढ़ते है। लम्बी बहस करते हैं । कई बार रिहर्सल करते है। ''हबीब तनवीर के संकेतों को कलाकार खूब अच्छी तरह समझते है और फिर इमप्रोवाइजेशन का कमाल शुरू हो जाता है। निर्देशन की सहजता के कारण की उनके कलाकार आत्मविश्वास से भरे–पूरे रहते है। अभिनेता स्वतः स्फूर्त और स्वाभाविक अभिनय करते हुए आगे बढ़ते है। परदे के पीछे की जिम्मेदारी निभाने वालों के काम में भी वे कम हस्तक्षेप करते है अभिनय के साथ–साथ मंचीय गतिविधि, दृश्य–बंध, वस्त्र–सज्जा, रूप विन्यास सुरीले संगीत के बल पर नाटक तैयार करते है। (14)

''हबीब तनवीर के नाटकों के मंचन के मंचन में तामझाम की आवश्यकता नही होती। सेट वगैरह की झंझट नही होती। साधारण रूप में नाटकों का मंचन होता है। मंच सज्जा प्रतीकात्मक होती है। सहज एवं सरल प्रतीक होते है। यथार्थ परिवेश स्वयं उत्पन्न हो जाता है। (15) अपने अनुभव संसार के बल पर वे प्रत्येक नाटक और उसके पात्रों पर अथक परिश्रम करते है। यही कारण है कि उनकी हर बार नई और ताजी लगती है। अतएव समग्र चिंतन के पश्चात् यह कहना बिल्कुल उचित है कि छ.ग. लोकसंस्कृति एवं लोकनाट्य परम्परा और समकालीन रंगकर्म में उसका खूबसूरत प्रयोग हबीब तनवीर की खासियत है। उनके द्वारा ''संस्कृत नाटक, लोकनाटक और आधुनिक नाटक से गुंथी हुयी पाँच दशकों की रंगयात्रा आधुनिक रंगमंच की ऐसी परम्परा है जिस परम्परा में नया दृष्टिपथ है, नया स्थापत्य है, नया उन्मेष है। (16) उनकी रंगकर्म यात्रा में छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति का सुंदर समन्वय उनके नाटकों को विशेष बनाता है।

निष्कर्ष :–

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही लोकसंस्कृति का उद्‌भव होता है। लोकसंस्कृति एवं लोककला लोकजीवन का प्रतिबिम्ब है। जो लोकजीवन के विभिन्न आयामों को प्रदर्शित करती है। लोकनाट्य में लोककथानक, लोकसंगीत, लोकगीत, लोकनृत्य का सहज लोकशैली में सरल स्वछंद, लौकिक एवं मुक्त अभिनय के साथ मंचन किया जाता है। लोकजीवन के संस्कृति –परम्पराओं का निर्वाह, उसके मनोरंजन एवं आत्मसंतुष्टि के लिए लोकनाटकों का मंचन होता रहा है। इसकी ताजगी और मिट्‌टी की खुशबू शिष्टजनों को सदैव प्रभावित करती रही है। जिससे प्रेरणा लेकर समकालीन रंगमंच में इसका सफल प्रयोग किया जाता रहा है। वास्तव में भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है यहॉ की अधिकांश जनता गाँवों में निवास करते हैं साहित्यकार या कलाकार भी यहीं से उत्पन्न होते है भले ही वह बाद में महानगरों में निवास करते है। लेकिन उनकी जड़े लोक से

जुड़ी रहती है। भारतवर्ष में विभिन्न भाषा, बोली और संस्कृति को सहेजे विभिन्न अंचल की खुशबू के साथ वहाँ संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्परा और लोक साहित्य और लोककला में प्रदर्शित होती है।

छत्तीसगढ़ के सहज, सरल लोगो की स्वछंद लोकसंस्कृति और छत्तीसगढ़ी भाषा की मिठास को रंगमंच के माध्यम से विश्वविख्यात करने में हबीब तनवीर का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने छत्तीसगढ़ लोकसंस्कृति के साथ भारतीय और पाश्यचात्य रंगशैलियों के मिश्रण से समकालीन रंगमंच को समृद्ध किया है। वस्तुतः हबीब तनवीर अपनी जड़ों से जुड़े हुए थे। जिसे वह ताउम्र रंगमंच पर निभाते भी रहे। इसीलिए पाश्चात्य रंग परम्परा के गंभीर अध्येता होने के बावजूद उनकी प्रस्तुतियों में छत्तीसगढ़ी लोकजीवन का सीधा साक्षात्कार होता है।

संदर्भ सूची :–

1. प्रितपाल अरोरा – इतिहास पुरूष हबीब तनवीर/चेतना 2010/पृ. 59
2. भास्कर चंदावरकर – रंगसंगीत/कलावार्त्ता/जु.सि. 2006/पृ. 13
3. गिरीश रस्तोगी – हिन्दी रंगमंच आंदोलन के अवरोधी तत्व/नया प्रतीक जून 1975/पृ. 72
4. महावीर अग्रवाल – प्रणति मंचीय सफर की आधी सदी/रंग संवाद/अक्टू.दिसं. 99
5. हबीब तनवीर – अपनी जमीन की महक ही अलग होती है/साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47/पृ. 124
6. डॉ. अजय कुमार शुक्ल और खुशबू सिंह – छत्तीसगढ़ लोकनाट्य और हबीब तनवीर का रंगकर्म, राष्ट्रीय सम्मेलन पत्रिका, कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर (छ. ग.) ISBN – 978-93-88867-88-7.
7. भारत रत्न भार्गव– हबीब तनवीर अनोखे रंगकर्मी हैं/साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47, पृ. 309
8. महावीर अग्रवाल– परम्परा और आधुनिकता का समन्वय/सापेक्ष–47/पृ.20
9. नामवर सिंह– सार्थक प्रयोग के अग्रणी/साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47, पृ.290
10. वही–पृ. 290
11. हबीब तनवीर– अपनी जमीन की महक ही अलग होती है। साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47, पृ. 32
12. हबीब तनवीर– नाटक का नाभिकेन्द्र कहां है। सा.–म.अ./सापेक्ष–47/पृ. 35
13. हबीब तनवीर– रास आएगा तनवीर इसी मुल्क का मौसम/सापेक्ष–47, पृ.60
14. महावीर अग्रवाल– हबीब तनवीर का रंग संसार/कला समय अ. 99 सि. 2000
15. वही – पृष्ठ 42
16. महावीर अग्रवाल– नाटक का नाभिकेन्द्र कहॉ है/सापेक्ष–47, पृ. 29